रात्रिक्लास 21-3-68 ओम शान्ति - शिव बाबा याद है?

ऊंच ते ऊंच है एक भगवान। माना फादर। किसको फादर? सभी जीवात्मायें जो हैं उन सभी का। जो भी मनुष्य मात्र है उन में जो आत्मा है उनका है फादर। अभी जो सभी आत्मायें पार्ट बजाती हैं वह पुनर्जन्म जरूर लेती है। कोई बहुत कोई थोड़े। कोई 84 पुनर्जन्म लेते हैं कोई 80 कोई 60। देहधारी जो भी मनुष्य हैं, भल यह ल०ना० विश्व पर राज्य करने वाले हैं। उस समय न्यु वर्ल्ड में और कोई डिनायस्टी नहीं होती है। जो भी देहधारी मनुष्य हैं कोई भी सदगति दे न सके। पहले2 है स्वीट सायलेन्स होम। सभी आत्माओं का घर। बाप भी वहां ही रहते हैं। इसको निराकारी दुनिया कहा जाता है। बाप ऊंच ते ऊंच तो रहने का स्थान भी ऊंच ते ऊंच है। बाप कहते हैं मैं ऊंच ते ऊंच हूं। मुझे भी आना पड़ता है। सभी पुकारते हैं। जो भी मनुष्य मात्र है पुनर्जन्म जरूर लेना है। सिर्फ एक बाप ही नहीं लेते हैं। पुनर्जन्म तो सभी को लेना ही है। कोई भी धर्म-स्थापक हो। बुध अवतार कहते हैं ना। बाप को भी अवतार कहते हैं। उनको भी आना पड़ता है। अभी सभी जीवात्मायें यहां मौजूद हैं। वापस कोई भी जा नहीं सकते हैं। पुनर्जन्म लेते हैं तब तो वृधि होती है ना। पुनर्जन्म लेते इस समय सभी तमोप्रधान हैं। बाप ही आकर नालेज देते हैं। बाप ही नालेजफुल है। आदि मध्य अन्त का नालेज उन में ही है। उनको ही नालेजफुल फिलीश फुल कहा जाता है। स्वर प्युर। बाकी मनुष्य मात्र प्युर इमप्युर बनते हैं। यह ल०ना० डीटी डिनायस्टी के फर्स्ट हैं। इनको ही पूरे 84 जन्म लेनी पड़ती है। पुनर्जन्म यहां ही लेते हैं। और फिर अन्त में बाप आकर सभीको पवित्र बना कर ले जाते हैं। बाप को ही लिबरेटर कहा जाता है। इस समय सभी धर्म स्थापक यहां हाजिर हैं। बाकी थोड़े हैं तो आते रहते हैं। वृधि होती रहती है। सर्व की सदगति दाता एक ही बाप है। शान्तिधाम वा सुखधाम के मालिक बनाते हैं। तुम ही पूरे 84 जन्म लेते हो। तुम जो पहले आये थे वही फिर पहले आवेंगे। क्राईस्ट फिर अपने समय पर आवेंगा। क्राईस्ट में इतनी ताकत नहीं जो किसको भी वापस ले जाये। वापस ले जाने की ताकत एक ही बाप में है। इस समय है रावण राज्य। डेविल राज्य। पुकारते भी हैं ओ यु डेविल। डीटी डेविल बन जाते। डेविल फिर डीटी बनते हैं। 84 जन्मों के विकार पूरे प्रवेश कर लेते हैं। बाप कहते हैं तुम डीटी दुनिया के मालिक थे। फिर रावण राज्य में तुम विकारी बन पड़े हो। पुनर्जन्म तो सभी को जरूर लेना ही पड़ता है। धर्म स्थापन कर वापस चला जाये यह हो नहीं सकता। उनको पालना जरूर करनी है। गाया जाता है ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना। पुरानी दुनिया का विनाश। नई दुनिया में एक ही धर्म एक ही डिनायस्टी थी। अभी वह है नहीं। सिर्फ चित्र है। और सभी धर्म मौजूद हैं। सिवाय एक गाडफादर के जो भी मनुष्य मात्र हैं देहधारी हैं पुनर्जन्म जरूर लेते हैं। भारत है अविनाशी खण्ड। यह कब विनाश नहीं होता। अनादी अविनाशी है। जब इनका राज्य था तो और कोई खण्ड था नहीं। सिर्फ इनका ही राज्य था। सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी। बस। और कोई नहीं। नई दुनिया स्वर्ग डिटी वर्ल्ड कहा जाता है। निराकारी दुनिया को स्वर्ग नहीं कहा जाता। वह है स्वीट सायलेन्स होम। निर्वाणधाम। आत्मा का ज्ञान सिवाय बाप के कोई दे न सके। आत्मा बहुत छोटी बिन्दी है। सभी आत्माओं का फादर है सुप्रीम सोल। उनको सुप्रीम फादर कहा जाता है। वह कब पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। इस समय नाटक के पिछाड़ी है। यह सारी वर्ल्ड स्टेज है। इसमें खेल चला रहा है। इनकी डेक्युरेशन है 5000 हजार वर्ष का। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। जब कि बाप आकर सभी को उत्तम ते उत्तम बनाते हैं। आत्मा अविनाशी है। यह ड्रामा भी अविनाशी है। बना बनाया खेल है। जो पास्ट हो गये वह उसी समय पर आवेंगे। पहले2 यह आये थे ल०ना० अभी नहीं हैं। सच्चा सत का संग एक यह है। बाकी तो है झूठे संग। लतसंग। अर्थात एक दो लात मारते हैं। सीढ़ी नीचे गिरने लिए। चढ़ नहीं सकते हैं। यह है ही दोज़क। परन्तु यह भी कोई समझते थोड़े ही हैं कि दोज़क में हैं। बहिस्त से सभी दोज़क में गिरे हैं। फिर बाप आकर सभी को ले जाते हैं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट ओमशान्ति।